International Journal of Applied Research 2020; 6(2): 342-344

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(2): 342-344
www.allresearchjournal.com
Received: 23-12-2019
Accepted: 26-01-2020

डॉ. कुमारी किरण
सहायक प्राध्यापिका एवं अध्यक्षा, मैथिली विभाग, बी. एम. कॉलेज, बरारी, कटिहार, बिहार

Correspondence Author:
डॉ. कुमारी किरण
सहायक प्राध्यापिका एवं अध्यक्षा, मैथिली विभाग, बी. एम. कॉलेज, बरारी, कटिहार, बिहार

परवर्ती कवि लोकनि पर विद्यापतिक प्रभाव

डॉ. कुमारी किरण

प्रस्तावना

कोनो शक्तिशाली घटकक सान्निध्यमे रहला पर हुनक प्रभाव पैड़ जेनै सामान्य बात अछि। चुम्बक कैं बीच निरन्तर रखल रहला पर लोहो मे चुम्बकत्व गुण आबि जाइत अछिं। महाकवि विद्यापतिक काव्यपरम्परा, विषय आ शिल्पक स्तर पर एतेक सशक्त छल जे केवल मैथिलीये मे नहि, अपितु पूर्वोत्तर भारतक समस्त रचना–प्रक्रिया हुनका सँ प्रभावित भऽ उठल। रागतरंगिणी मे संकलित पदक विधिवत अनुशीलन केला पर विद्यापतिक प्रभावक प्रमाण भटैत अछि। राधाकृष्णविषयक काव्यसृजनक परम्परा विद्यापति सँ पूर्वो छल, मुदा विद्यापति राधाकृष्ण विषयक प्रेम कैं अपन गीतक माध्यम सँ जे विस्तार देलैन, ताहि कैं सहज प्रभाव हुनक समकालीन अनेको रचनाकार पर पड़ल। भाव, शिल्प, छन्द–सब तरह सँ समकालीन रचना– प्रक्रिया विद्यापति सँ प्रभावित भेल। मिलन–विरह, नख–शिख वर्णन, मान–अभिसार, भक्ति– शृंगार आदिक विषय पर भिन्न–तरह कैं छन्दमे गीत रचल गेल। पदक अन्तमे भनिता, मिलनक उत्कण्ठा, विरहमे व्यथा आ व्याकुलता, मिलन कैं बादो अतृप्ति आदि अनेक उपादान ओहि समयक अनेको कवि कैं लग पाओल गेल। रागतरंगिणी मे संकलित रचना कैं देखला पर सेहो ई बुझन जाइत अछि।

परवर्ती काव्यधारामे मैथिली कैं सन्दर्भ मे इहे कहल जा सकैत अछि जे बहुतो अन्तराल तक लगभग विद्यापतियेक परम्पराक निर्वाह भेल। गोविन्ददास, उमापति, रत्नपाणि, हर्षनाथ, हरिदास, महाराजा महेश ठाकुर, लोचन आदि तऽ महाकवियेक परम्परा कैं आगू बढ़ौलनि। किछु संकलनकर्त्ता लोकनि तऽ अपन रचनाक भनिता मे विद्यापतिक नाम जोड़ि देलैन आ एहि कारणे अनुसन्धान करए बला लोकक लेल एकटा समस्या खड़ा भए गेल। गोविन्ददास तऽ विद्यापति कैं मुक्तकंठ सँ अपन प्रेरणाक स्रोते मानि लेलनि–

'कविपति विद्यापति मतिमाने, जाक गीत जगचीत चोराओल गोविन्द गौरि सरस रस जाने।' [1]

एहि कैं केवल भावे नहि, छन्दे नहि, विषये नहि, भाषा रूप आ ओकर विविध व्याकरणिक पक्ष पर आ वर्तनी तक पर विद्यापतिक प्रभाव पड़ैत रहल। हिन्दी कैं रीतिकलीन आ भक्तिकालीन कवि लोकनि कैं तऽ एकटा बड पैघ सूची बैन सकैत अछि, जिनक रचना मे विद्यापतिक प्रभाव देखल जाइत अछिं। सूरदास, बिहारी, देव, नन्ददास, केसवदास, अपितु अष्टछापक सभ कवि, मतिराम, मीराबाई, तुलसीदास, रसखान, जायसी, पद्माकर आदिक रचनामे तऽ विद्यापतिक सीधा प्रभाव देखल जाइत अछि वा विद्यापति द्वारा प्रारम्भ कएल गेल भाव, अर्थ, प्रतीक आदिक विकास।

सूरदासक राधा–कृष्णविषयक पदमे शृंगार आ भक्तिक अपूर्व समागम भेटैत अछि। सूरक सौन्दर्यपरक दोहो मे विद्यापतिक स्पष्ट प्रभाव खोजबामे कोनो संशय नहि होइत अछि। प्रो. मैनेजर पाण्डेय से हो इएह बात कहने छथि जे 'विद्यापतिक गीतक प्रभाव सूरदासक लीलाक पद पर देखल जाइत अछि। [2] पिया मिलन कैं समयक आतुरता, विह्वलता, बेचैनी, अपन सहज अभिव्यक्ति पर अनियन्त्रण आ अनायास चेष्टा कैं जे प्रखर रूप सूरक नायिकामे अछि, ओ विद्यापतिक परम्पराक अछि। हिन्दी कैं अन्य परवर्ती कवि पर सेहो हुनक गीतक प्रभाव खोजल जा सकैत अछि।

सर्वमान्य तथ्य हेबाक चाही जे विद्यापतिक लग रीति–परक रचना कैं प्राथमिक संकेत दर्ज भेल अछि। हुनका प्रथम रीति कवि मानबामे किनको कोनो दुविधा नहि हेबाक चाही। हिन्दी कवितामे ओ कृष्ण–भक्तिक धारा आ शृंगार–धाराक उद्गाता–कवि अछिं। हिन्दी मे वैष्णव कविता, भक्ति–कविता, शृंगारपरक कविता, मुक्तक कविता, गीति कविता आदि कैं प्रारम्भ हुनके लेखनी सँ होइत अछि। विद्यापतिक परवर्ती कालक काव्य–धारा पर ध्यान देला सँ बुझल जाइत अछि जे विषय–वस्तु, प्रवृत्ति, आ शैली सभ दृष्टि सँ हिन्दी कैं परवर्ती काव्य पर हुनक अद्वितीय असर अछि। हिन्दी कैं भक्तिकालीन कृष्णकाव्य–धारा कैं लगभग सभ कवि पर हुनक रचना शैली आ वस्तु–विवेचना कैं अनुपम प्रभाव देखल जाइत अछि। अष्टछापक कवि पर विद्यापति कैं छाया तऽ स्पष्ट देखले जाइत अछि। कृष्ण–भक्ति शाखाक कवि कैं अतिरिक्त रीतिकालक रीतिबद्ध आ रीतिसिद्ध कवि पर हुनक सर्वाधिक प्रभाव अछि। एकर बादक कविमे तुलनात्मक दृष्टि सँ देखला पर भारतेन्दु युग, छायावाद

आ उत्तर छायावादक समयमे ई प्रभाव कने कम अवश्य देखल जाइत अछि, मुदा एहि कैं कारणे ईहो नहि मानबाक चाही जे आधुनिक कालमे आबि कैं रचनाकारक दृष्टिमे महाकवि विद्यापतिक महत्त्व कम भऽ गेलनि। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर 'मेरी पसन्द की कविताएँ' आ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' 'चण्डीदास आ विद्यापति' मे महाकवि विद्यापतिक सम्बन्धमे अपन अनुरक्ति स्पष्ट केने छथि। [3] महाकवि विद्यापतिक पंक्ति– 'तोहे जनमि पुनि तोहे समाओब, सागर लहरि समाना' [4] कैं यदि कबीरक पंक्ति– 'दरियाव की लहर दरियाव है जी, दरियाव और लहर में भिन्न कोयम?' कैं मिला कऽ देखला पर भाव–साम्यक स्पष्ट छवि सामने आबैत अछि। [5]

एहि तरहे कृष्ण कैं अनुपस्थिते भेला सँ विद्यापति कैं नायिकाक सभ स्थिति सुनसान भऽ जायत अछि। हुनक मनोभाव कवि एहि प्रकार सँ व्यक्त केने छथि–

'सुन भेल मन्दिर, सुन भेल नगरीय, सुन भेल दस दिस, सुन भेल सगरी।' [6]

आ एमहर गिरिधर गोपालक अनुपस्थिति मे मीराबाई कैं दशा सेहो किछु एहने भऽ जायत अछि– 'सूनो गाँव, देश सब सूनो, सूनी सेज अटारी।' [7]

एहि दुनू उद्धरण कैं एक साथ देखला पर प्रवृत्तिगत आ शिल्पगत वैशिष्ट्यक समान छवि स्पष्ट भ जायत अछि। एहि तरहे निराला कैं पद्यखण्ड–

'नवगति, नवलय, ताल छन्द नव, नवल कण्ठ, नव जलद मन्द्र रव।
नव नभ के नव विहग वृन्द को, नव स्वर नव वर दे।।' [8]

पर विद्यापतिक पंक्ति–

'नव वृन्दावन नव नव तरुगण, नव नव विकसित फूल।
नवल वसन्त नवल मलयानिल, मातल नव अतिकूल।।' [9]

कैं स्पष्ट प्रभाव देखल जायत अछि।

नागार्जुन आ राजकमल चौधरीक लेल तऽ विद्यापति आदर्श कवि रहल छथि। नागार्जुन तऽ विद्यापति कैं पदक अनुवादो केला आ राजकमल चौधरी अपन अनेको कवितामे बहुत श्रद्धा सँ हुनक स्मरण कयने छथि।

हिन्दी कैं आधुनिक कालमे आबि कैं देखल जे तऽ निराला, नागार्जुन, राजकमल चौधरी कैं साथ–साथ आन कतेको रचनाकारक रचनामे सेहो विद्यापतिक स्पष्ट प्रभाव देखल जायत अछिं। ई केवल मैथिली आ हिन्दीए कैं बात नहि अछि, असलमे महाकवि विद्यापति कैं गीतक प्रभाव–शक्तिए एतेक प्रबल रहल जे प्रान्तेतर भाषा पर तक प्रभाव भेल बिना नहि रहि सकल। बंगाल, आसाम, ओड़ीसा आ नेपालक साहित्यिक परम्परा पर सेहो विद्यापति कैं गीतक प्रभाव पड़ल। बंगाल आ आसाममे विद्यापतिक मान्यता वैष्णव भक्तक रूपमे भेल। विद्यापति कैं जाहि गीत कैं मिथिलामे शृंगारिक गीतक सत्ता प्राप्त छल, ओ बंगालमे कीर्तनक रूपमे अनुगृहीत भेल। चैतन्यदेव समेत अनेको वैष्णव भक्त एकर अनुसरण कयलनि। अनेको बंगाली कवि एहि भाषा आ भावक अनुकरण करैत काव्य सृजन कयलनि जे 'ब्रजबुलि साहित्यक नाम सँ विख्यात भेल। [10]

वैष्णव धर्मक प्रचार जखन पूर्वांचलमे पूर्णरूप सँ भऽ गेल तऽ ओहि क्षेत्रमे विद्यापति कैं गीतक गायन होमऽ लागल। आसामक 'वरगीत' आ 'अंकिया नाट' विद्यापति कैं प्रभाव सँ पल्लवित पुष्पित भेल। एहि साहित्यमे रचल गेल गीतक भाव, विषय आ शैली, विद्यापतिक प्रभाव सँ परिपूर्ण अछिं। [11]

ब्रजबुलि साहित्यक माध्यम सँ विद्यापति कैं गीतक प्रभाव ओड़ीसा कैं साहित्य पर सेहो पड़ल। सोलहम शताब्दीक किछु मैथिल कवि ओड़ीसा कैं शासक नरसिंह देवक दरबारमे छलाह, जिनका पर विद्यापतिक रचनाधर्मिता कैं भरपूर असर अछि। नेपालमे तऽ सहजहि, विद्यापतिक असर देखल जा सकैत अछि। सिंहभूपति, जगज्ज्योतिर्मल्ल आ भूपतीन्द्र सनक अनेको रचनाकार सतरहम शताब्दीमे एहन भेलाह, जे नेपालमे रहि कऽ अपन आश्रयदाता कैं शासन कालमे विद्यापतिक परम्परा सँ प्रभावित भए कऽ रचना करैत रहलाह। आइयो विद्यापतिक पदावली कैं जे किछु संग्रह प्राप्त भेल, ओकर एकटा बड़ पैघ भाग नेपाले सँ प्राप्त भेल अछि। प्रभाव ग्रहण करब ई सभ सहृदय सँ सम्भव अछि, ठीक ओहि तरहे प्रभाव छोड़ब सभ शक्तिशाली घटक सँ सम्भव अछि। ई सदा सँ चलि आबैत रहल अछि।

इलिएट सनक महान् रचनाकार सेहो एहि सम्बन्धमे स्वीकार करैत छथिं जे 'प्रभाव ग्रहण केनै कोनो कवि कैं शक्ति आ क्षमताक अचूक कसौटी अछि। अपरिपक्व कवि अनुकरण करैत छथिं, परिपक्व कवि चोराबैत छथि। बुरबक कवि (असफल–अपरिपक्व) जे किछु दोसर सँ ग्रहण करैत छथि ओहि कैं विकृत कए दैत छथि, सुन्दर कवि (सफल–अपरिपक्व) जे किछु दोसर सँ ग्रहण करैत छथि, ओहि कैं सर्वथा भिन्न रूपमे वा सुन्दर ढंग सँ प्रस्तुत करैत छथि। एकटा सफल कवि सामान्यतया प्राचीन लेखक वा भिन्न भाषा अथवा भिन्न रुचि कैं लेखक सँ प्रभाव ग्रहण करैत छथि।' [12]

प्रसंगवश एहि ठाम एजरा पाउण्डक उल्लेख सेहो अनुचित नहि होयत। ओ कहने छथि जे– 'कवि को यथासम्भव महान् कलाकारों से प्रभाव ग्रहण करना चाहिए, लेकिन उसे या तो शालीनता के साथ प्रभाव स्वीकार कर लेना चाहिए, या छिपा लेना चाहिए।' [13] विद्यापतिक गीतमे एहन शक्ति अछि जे नहि केवल हुनक तत्काल बादे वाली पीढ़ीक रचनाकार कैं प्रभावित कयलनि बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी ओहि कैं प्रभावक छाया रहल। परवर्ती कालक कतेको पीढ़ी कैं कतेको सम्भावनाशील रचनाकारक रचनाधर्मिता हुनका सँ यथायोग्य प्रभावित भेल। प्रभाव कतेको बेर एहनो भए जायत अछि जे ओ साफ–साफ देखल नहि जायत अछि। एकटा श्रेष्ठ प्रतिभा अपन पूर्ववर्ती श्रेष्ठ प्रतिभाक प्रभाव कैं एहन तरह सँ पचा लैत अछि जे भावक कैं सामने साफ–साफ परिलक्षित नहि भऽ पाबैत अछि।

महाकवि विद्यापतिक गीतक प्रभाव सँ प्रभावित भेने बिना जखन कोनो साधारण जीवो नहि रैह पाबैत अछि तऽ कोनो रचनाकार केना निष्प्रभावित रैह जेताह। बंगलाक विद्वान् सुशील कुमार चक्रवर्ती तऽ साफ कहने छथि– No other persons in the world] not even my brother] sister or wife has given me such joy as these lyric peots (Vidyapati and Chandidas) have done. [14] आ कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर तऽ साफे–साफ स्वीकार कयलनि जे– The songs and poems of vidyapati were one of my earliest delights that stirred my youthful imagination. [15] बंगलाक एकटा आओर चिन्तक कहैत छथि– 'उपमाय तिनि कालिदासौ मत सिद्धिहस्त छिलेन।' [16]

विद्यापतिक अवसानक एखन बहुतो दिन नहि भेल, छह–सात सौ वर्षक समय इतिहासक लेल बहुत ज्यादा समय नहि होयत अछि। मुदा एतबे कम दिनमे विद्यापतिक छवि हमरा सामने एकटा मिथक जेकाँ बनि गेल अछि। सौन्दर्यक कवि, भक्त कवि, वैष्णव कवि, शाक्त कवि, शैव कवि हुनक सभ कहल गेल अछि। दोसर तरफ नजर देला सँ हुनका किम्बदन्ती पुरुष सेहो मानल गेल अछि। हुनक जन्मक पूर्व सँ लए कऽ बाद तकक जनश्रुतिक प्रामाणिकता कैं खोज कएल जा सकैत अछि।

जनश्रुति अछि जे विद्यापतिक पिता गणपति ठाकुर कैं पुत्र नहि होयत छल। कपिलेश्वर स्थान (मधुबनी जिलामे अवस्थित एकटा शिव–मन्दिर) मे शिवक आराधनाक पश्चात् हुनक जन्म भेल। ओ महाराजा शिव सिंह सँ दुई वर्ष पैघ छलाह। नौ–दस वर्षक अवस्था सँ ओ पिताक साथ राजा गणेश्वरक दरबारमे जाय लगलाह। कीर्तिलताक रचना ओ 19–20 वर्षक अवस्थामे कयलनि। सिंहासनारूढ़ होयते शिव सिंह हुनका 'विस्फी' गाँव

दानमे दए देलन्हि। जनश्रुति अछि जे कर नहि देबाक अपराधमे एक बेर शिव सिंह कँ दिल्लीक इस्लाम बादशाह आमन्त्रित कए दिल्ली बजौलनि आ ओहिठाम गिरफ्तार कए लेलकन्हि। विद्यापति हुनका छुड़ेबाक लेल दिल्ली पहुँचलाह। बादशाह हुनका अदृष्ट रचना करबाक लेल कहलन्हि। हुनका एकटा सन्दूकमे बन्द कए कुआँ मे लटका देल गेल आ बाहर कोनो युवती कँ आगि फूँकक लेल कहल गेल। पुनः कवि कँ बाहर निकालि कए कविता लिखबाक लेल कहल गेल। एहने हुनका परोक्षमे कोनो युवती कँ स्नान करबाक लेल कहल गेल आ एहि घटना पर हुनका कविता लिखक लेल कहल गेल। कवि एहन अवसर पर कविता लिखलाह– 'सुन्दरि! निहुरि फुकू आगि' आ 'कामिनी करए असनाने' गीत एहने अवसरक अछि। बादशाह गीत सुनि कँ प्रसन्न भेलाह आ शिव सिंह कँ लए महाकवि वापस एलाह।

कहल जायत अछि जे एक समय महादेव प्रसन्न भए कऽ गुप्त रूप सँ उगना कँ रूपमे विद्यापतिक सेवा करए लगलाह। उगना सँ सम्बन्धित अनेको कथा प्रचलित अछि। कहल जायत अछि जे सपनामे देखल गेल घटनाक आधार पर ओ अपन मृत्युक घोषणा कयलन्हि आ गंगाक किनारमे देहत्यागक लेल चलि पड़लाह। बहुतो दूर गेलाक बाद एकठाम रुकि कँ बजलाह कि गंगा मैयाक दर्शन हेतु बेटा जखन एतेक दूर आबि सकैत अछि तऽ माँ कँ किछुओ दूर सेहो आबऽ पड़त, आ गंगा ओहिठाम तक आबि गेलीह। एहन किम्बदन्तिक ऐतिहासिक प्रमाण की अछि ई शोधक विषय अछि। मुदा एतबा तऽ तय अछि जे हुनक रचनाक जे प्रमाण हमरा सभक सामने उपलब्ध अछि, एखन पूर्णरूप सँ ओहि पर शोध नहि भऽ सकल।

विद्वानक परिपाटी तऽ रचनाकारक परिभाषित, आ सीमित करबाक अछि आ ओहि पर निर्णयात्मक वाक्य कहबाक अछि। मुदा विद्यापतिक सम्बन्धमे विद्वानक सामने सतत समस्या आबैत रहल। हुनक फलक एतेक विस्तृत अछि जे ओ विद्वानक पहचान–शक्तिक सीमामे समा नहि पेताह। हुनका लग जतेक कोनो पारिभाषिक शब्दावली अछि, ओ विद्यापतिक लेल अपूर्ण भए जायत अछि। वीरगाथा कवि कहल जाए तऽ प्रेम छूटि जायत अछि, भक्त कवि कहला पर शृंगार छूटि जायत अछि, ईहो कहि देल जाय तऽ लोक चेतनाक उजागर करऽ बला हुनक रूप अनदेखल रहि जायत अछि।

सभ मिला कऽ इहे कहल जा सकैत अछि कि अपन भाषाक सादगी, प्रयोगमे ग्राम्य आ भदेसपन रहलाक बादो महाकवि विद्यापतिक जे विराट रूप हमरा सामने अछि, ओ सम्पूर्ण भारतीय भाषामे अनोखा आ अद्वितीय छलाह। हुनका लगक काव्यक जे कोनो कसौटी सँ समीक्षा शुरू करी, काव्यक जे कोनो पहलू कँ उठायब, ओहिठाम लावण्यक सन्तृप्ति जेना पूर्णता देखल जायत अछि, एकदम सँ उचित, ने कनियो बेसी आ ने ज्यादा कम। हुनक सौन्दर्यप्रियताक चर्चा करैत डॉ. शिवप्रसाद सिंह कहैत छथि जे– 'सौन्दर्य उनका दर्शन है, सौन्दर्य उनकी जीवन–दृष्टि। इस सौन्दर्य को उन्होंने नाना रूपों में देखा था, इसे कुशल मणिकार की तरह उन्होंने चुना, सजाया, सँवारा और आलोकित किया था। सौन्दर्य मन को कितना भाव विह्वल और एकोन्मुख कर देता है, इसे विद्यापति ही जानते थे।' [17]

सौन्दर्य सँ सम्बद्ध विद्यापतिक रचना कँ अनुशीलन सँ इएह बात सामने आबैत अछि जे ओ सौन्दर्यक भोक्ता नहि स्रष्टा छलाह, सौन्दर्य हुनका नेत्र, प्रवृत्ति आ मन मे छल। हुनका मिलन केर सभ स्थिति प्रिय छल, विरहक सभ स्थिति व्याकुल करए लायक आ मिलनमे बाधा उत्पन्न करए बला प्रत्येक तत्त्व अप्रिय आ त्याज्य छल। भले ओ प्रेमी–प्रेमिका कँ मिलनमे उपस्थित बाधा, लोकलाज अथवा गुरुजनक धाख हो वा भक्त–भगवान् कँ मिलनमे उपस्थित बाधा विषय वासना आ आलस्ये कियेक नै हो। संगीत आ प्रेम मानव कँ जीवनक आत्मिक सुख कँ चरम पर पहुँचाबैत अछि। मैथिलीमे रचल गेल हुनक सभ गीत कँ ध्यान सँ देखू, चाहे ओ शृंगारिक हो वा आध्यात्मिक, तऽ ई बात स्पष्ट भऽ जायत। एहि गीतमे व्याप्त ई दुनू तत्त्व ओहि तल्लीनता सँ भावक तक पहुँच जायत, एहि लेल ओ ग्राम्यपद, लोकोक्ति, बोल–चालक भाषा, जनपदक लोकाचार आदि सभक सहारा लेलनि आ सफल भेलाह।

संदर्भः

1. हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ.– 232
2. भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य, पृ.– 264
3. हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ.– 279
4. हिन्दी विश्वकोश, भाग–21, पृ.– 168
5. सूर के पद और रचना दृष्टि, पृ.– 33
6. महाकवि विद्यापति, पृ.–44
7. भक्तिकालीन कवियों के काव्य सिद्धान्त, पृ.– 19
8. हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ.– 218
9. विद्यापति पदावली भाग–1–2
10. विद्यापति अनुशीलन, खण्ड–1, पृ.– 87
11. विद्यापति अनुशीलन, खण्ड–1, पृ.– 116
12. विद्यापति–सूर–बिहारी का काव्य सौन्दर्य, पृ.–114
13. विश्व कवि विद्यापति, पृ. 79
14. द' सेक्रेड वुड, पृ.– 125
15. लिट्रेरी एसेज, पृ.– 5
16. रीतिकाव्य : एक नया मूल्यांकन, पृ.–47
17. मैथिली साहित्य का इतिहास, विद्यापति, पृ.– 154